प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 1.2.68

बच्चों को समझाया गया है कि आत्माओं का निवास स्थान है टावर ऑफ सायलेंस। यानी शांति की चोटी। जैस हिमालय पहाड़ की चोटी है ना। वह बहुत उंची होती है। तुम रहते भी उंच ते उंच हो। वह लोग पहाड़ों आदि पर चढ़ने की प्रैक्टिस करते हैं। डोरी पर चढ़ते हैं। तुम बच्चे तो जाते हो शांतिधाम। वह तुम्हारा निवास स्थान है। पहाड़ चढ़ने में भी कोई2 होशियार होते हैं। सभी नहीं चढ़ सकते। तुम बच्चों को इसमें डोरी आदि की दरकार नहीं है। आत्मा जो पतित है उसको पावन बन उपर जाना है। इसको कहा जाता है टावर ऑफ सायलेंस और वह फिर है टावर ऑफ सायंस। उनके बड़े2 होते हैं। उनका भी टावर होता है। खौफनाक चीजें ,जहर आदि गोलों में डालते हैं। बाप कहते हैं तुमको उड़ना है घर तरफ। वे फिर वहां ही घर बैठे बम्स ऐसे फेंकेगे जो सभी को खतम कर देंगे। तुमको तो यहां से उपर जाना है। टावर आफ सायलेंस। वहां से ही तुम आये हो फिर जावेंगे तब जब सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान में आये हो। फिर सतोप्रधान बनना है। जो सतोप्रधान बनने पुरुषार्थ करते हैं वह फिर औरों को भी रास्ता बताते हैं। तुम बच्चों को अभी सुकर्म करना है। कोई भी विकर्म न करना है। बाप ने कर्मों की गति भी समझाई है। रावणराज्य में तुम्हारा दुर्गति हुई है। अब फिर बाप सुकर्म सिखलाते हैं। 5विकार बड़ी दुश्मन है। मोह भी विकर्म है। एक भी विकार कम विकर्म नहीं है। मोह रखने से भी देहाभिमान में फंस मरते हैं। तो इसलिए बाप बैठ समझते(समझाते) हैं। कन्या को तो सबसे जास्ती सहज है। तुम सभी कन्यायें हो। कन्या पवित्र को कहा जाता है। माताओं को भी पवित्र बनना है। ब्रह्माकुमारियां हो ना। भल बूढ़ी हैं पर ब्रह्मा के तो बच्ची हैं ना। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों को अब कुमारी के भी स्टेज से नीचे उतरो। जैसे पहले शरीर में आये हो ऐसे फिर निकल जाना है। मेहनत करनी है अगर उंच पद पाने चाहते हो तो। और कोई भी स्मृति न आये। हमारे पास है ही क्या? हाथ खाली आये हैं ना। कुछ भी नहीं। शरीर भी नहीं था। अब इस शरीर को भी भूलना है। अनासक्त कर्मातीत बन जाना है। ट्रस्टी बनो। बाप कहते हैं भल घूमो–फिरो। बाकी फाल्तू खर्चा न करो। मनुष्य दान भी बहुत करते हैं। अखबार में पड़ता है फलाना बहुत दानी था। हास्पिटल ,कालेज आदि बनाई। जो बहुत दान आदि करते हैं उनको गवर्मेंट से टाइटिल आदि भी मिलते हैं। तुमको भी बहुत बड़ा टाइटिल मिलता है। पहले2 टाइटिल होता है हिज होलिनेस, हर होलिनेस। होली पवित्र को कहा जाता है। जैसे पवित्र थे ऐसे पवित्र बनना है। फिर आधा कल्प पवित्र रहेंगे। तुमको बहुत कहेंगे यह कैस हो सकता है। वहां भी तो बच्चा पैदा होते हैं। तुम फट से बोलो वहां कोई रावण राज्य थोड़े ही है। रावण द्वारा ही विकारी दुनियां होती है। राम बाप आय पावन बनाते हैं। वहां पतित कोई हो कैसे सकता? कोई तो समझते हैं पवित्रता की बात भी नहीं करनी चाहिए। सृष्टि कैसे चल सकेगी? यह पता ही नहीं है कि पवित्र दुनिया थी। अभी विषस दुनियां है। यह खेल शिवालय–वैश्यालय। पतित दुनियां, पावन दुनिया। पहले है सुख ,फिर दुःख। कहानी होती है ना। कैसे राजाई ली फिर कैसे राजाई गंवाई। अभी इसको अच्छी रीत समझना है। हमने हार खाई फिर जीत पाने बहादुर बनना है। अपनी अवस्था को जमानी चाहिए। घर–बार होते उन्हों को सम्भाल करते, पवित्र रहना है। कोई अपवित्र ....न हो। मोह भी तो बहुतों को होता है। अपन को देखना चाहिए ....तो प्रतिज्ञा की है कि आप के सिवाय किसको भी प्यार न करेंगे। फिर दूसरों को क्या प्यार करते हो। जो प्यारी चीज है वही याद आनी चाहिए। फिर ओर सभी देह के सम्बंध भूल जाना चाहिए। सबको देखते हुए समझेंगे हम तो अभी स्वर्ग में रहे हैं। यह तो सभी कलियुगी बंधन है। हम तो अभी दैवी सम्बंध में जा रहे हैं। और कोई मनुष्य की बुद्धि में यह ज्ञान नहीं है। तुम बाप की याद में अच्छी तरह रहो तो अंदर में खुशी का पारा भी चढ़े। बाहर से दिखाना है। ऐसे नहीं बड़े2 .....आदि रखनी है। ऐसा कुछ होगा तो बंधन रहेगा। बंधन जितना हो सके कम

हो। मनुष्य वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर घूमना–फिरना मोटरें आदि छोड़ देते हैं। तो अपन को हल्का करना चाहिए। बंधन बढ़ाने की दरकार नहीं। इस राज्य पाने में पैसे आदि की दरकार नहीं। बिगर कोई खर्चा तुम विश्व की बादशाही लेते हो। उन्हों को बारूद ,लश्कर आदि पर कितना खर्चा होता है। तुम्हारे पास खर्चे कुछ भी नहीं। इसको दान कहा जाता है। बाबा को देते नहीं ; परंतु लेते हैं। बाप तो है गुप्त। वह श्रीमत देते रहते हैं। ऐसे करो, म्यूजियम खोलो। यह है रुहानी यूनिवर्सिटी और हॉस्पिटल। यूनिवर्सिटी से तुम नालेज प्राप्त करते हो और हॉस्पिटल अर्थात् योग से तुम सदैव के लिए निरोगी बनते हो। हेल्थ–वेल्थ उनके साथ हैपीनेस भी है। 21जन्म लिए तन्दुरुस्ती, सुख–शांति एक सेकेंड में मुक्ति–जीवनमुक्ति कैसे मिलती है आकर समझो। दर पर ही तुम समझाय सकते हो। जैसे दर पर भिक्षा लेने आते हैं ना। तुम यह जैसे भिक्षा देते हो। जिससे....एकदम मालामाल हो जाये। कोई भी हो, बोलो तुम भीख क्या मांगते हो? हम तुमको ऐसे भीख देते हैं जो जन्म–जन्मांतर भीख मांगने से छूट जोवेंगे। बेहद के बाप को और सृष्टि चक्र को जानने से तुम यह बन जावेंगे। तुम्हारा यह बैज बहुत कमाल कर सकती है। सेकेंड में बेहद का वर्सा तुम इनसे दे सकते हो। सर्विस करनी चाहिए ना। बाप सेकेंड में विश्व का मालिक बनाते हैं। फिर है पुरुषार्थ पर। छोटे–बड़े सबको कहा जाता है बाप को याद करो। ट्रेन में भी तुम बैज पर सर्विस कर सकते हो। छोड़ना न चाहिए। ट्रेन में अंदर घुस जाने में कोई रोक नहीं सकते हैं। टिकिट तो है। बैज एक/दो पड़ा हुआ हो। सबको समझाते रहो। तुमको मालूम है दो बाप हैं। दो से वर्सा मिलता है। तीसरा फिर होता नहीं। ब्रह्मा से कोई वर्सा थोड़े ही मिलता है। यह तो दलाल हो गया। दो से मिलता है। लौकिक और पारलौकिक। इन द्वारा बाप तुमको सिखलाते हैं। वर्सा देते हैं। आसामी देखकर भी समझाना होता है। यात्रा पर भी बहुत जाते हैं। वह सभी हैं जिस्मानी यात्रा। यह है रुहानी। इससे तुम विश्व का मालिक बनते हो। जिस्मानी यात्रा से तुम धक्के खाते रहते हो। सीढ़ी का चित्र भी साथ में हो। कच्छ में तुमको यही रहना है ना और क्या? ताकत रहती है फिर इनको भोजन आदि भी परवाह नहीं रहती है। खुशी में भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा। कहा भी जाता है ना खुशी जैसी खुराक नहीं। धन नहीं होता तो इनको बड़ी2 भूख लगती रहेगी। धनवान राजाओं आदि का जैसे पेट (भरा) रहता है। बड़ी रॉयल चलन रहती है। .....भी फर्स्टक्लास। तुम समझते हो हम क्या बन रहे हैं। वहां खान–पान बड़ा रॉयल्टी से होता है। बेटाइम कब खाते नहीं है। बड़ा रॉयल्टी ,शांति से खाते हैं। सब गुण सीखने चाहिए ना। निराकार की महिमा, देवताओं की महिमा और अपनी महिमा तीनों की जांच करो। अभी तुम बाबा के गुणों वाले बन रहे हो। फिर बनेंगे देवताओं के गुण वाले। तो वह गुण धारण करनी चाहिए ना। अभी तुम सीखते हो। दैवी गुण भी सीखने हैं। गाते हैं ना सुख का सागर, शांति का सागर। जैसे बाप पूजा जाता है तुम भी पूजे जावेंगे। बाप तुमको नमस्ते करते हैं। ना। तुम्हारी तो पूजा भी डबल होती है। आत्माओं के बिंदी....में भी पूजा होती है। और तुम फिर देवताएं हो। उस रूप में भी पूजा होती है। यह सभी बातें बाप ही समझा रहे हैं। तुम्हारी महिमा भी समझाई। अब पुरुषार्थ कर ऐसा बनो। दिल से पूछना चाहिए हम ऐसा बने हैं? जैसे हम नंगे आये थे फिर नंगे ही जाना है। शास्त्रों में भी है ना इनको बोला लाठी भी छोड़ो। यह बातें शास्त्रों में बैठ लिखी हैं। ऐसा कोई हुआ नहीं है। इसमें तो लाठी की बात नहीं। शरीर को भी भुलाना होता है। बाकी वह तो सभी हैं भक्तिमार्ग की बातें। यहां तो सिर्फ बाप को याद करना है। बाप बिगर दूसरा न कोई। तुम बच्चों को ज्ञान मिला है। समझ सकते हो भक्तिमार्ग में वह लोग क्या2 सिखाते हैं। कितने इन गुरुओं की जंजीरों फंस पड़े हैं। इनसे छुड़ाना है। अनेक प्रकार के गुरू हैं ना। अब ना गुरू न और कुछ पढ़ना है। बाबा ने एक ही मंत्र दिया है। मामेकम् याद करो और दैवी गुण धारण करो। गृहस्थ

व्यवहार में रहते हुए पवित्र बनना है। यहां थोड़े ही बैठ जाना है। यहां तो आते ही हैं रिफ्रेश होने। वहां समझते हो हम बाबा के सम्मुख बैठे हैं। वहां समझेंगे बाबा मधुबन में बैठा है। यहां सामने है। जैसे हमारी आत्मा इस तखत पर बैठी है वैसे बाबा भी इस तखत पर बैठे हैं। बाबा कब कोई गीता आदि शास्त्र आदि नहीं लेते हैं। ऐसे भी नहीं इसने कोई कंठ किया है। साधु–सन्यासी लोग कंठ करते हैं। यह तो है ज्ञान सागर। ब्रह्मा द्वारा सब राज़ समझाते हैं। शिवबाबा कब कोई स्कूल में ,सतसंग में गया क्या? नहीं। बाप तो सब कुछ जानते हैं। कोई कहे भला सायंस जानते हैं? बाप कहते हैं सायंस से हमको क्या करना है? मुझे बुलाते हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। इसमें सायंस क्यों सीखूं? कहेंगे शिवबाबा ने फलाने शास्त्र पढ़े हैं? अरे, इनके लिए कहा ही जाता है ज्ञान सागर, शांति का सागर। बाप खुद कहते हैं शास्त्र सभी भक्ति मार्ग के हैं और इनमें है सारी झूठ। कितनी बातें बनाई हुई है। विष्णु के हाथ में शंख आदि दिया है। अर्थ का पता नहीं है। वास्तव में यह अलंकार ब्रह्मा का ब्राह्मणों के देना चाहिए। विष्णु तो सूक्ष्मवतन में लाया ही क्यों है?यह श्रंगार आदि सूक्ष्मवतन में होते हैं क्या?हां, तुमको सा. हो सकता है ;क्योंकि चित्र देखा है। सूक्ष्मवतन में तो हड्डी–मांस ही नहीं। तो यह अलंकार फिर कैसे होंगे?देखा है तो सिर्फ सा. होता है?बाकी कुछ है नहीं। ब्रह्मा का भी सा0 बहुतों को घर बैठे होते हैं। कृष्ण का सा. बहुतों को होता है। इसका अर्थ ही है ब्रह्मा के पास जाओ तो इस कृष्ण जैसा बन जावेंगे। वह कृष्ण गोद में आ जावेगा। वह सिर्फ प्रिंसपने का सा. होता है। अगर तुम अच्छी रीत पढ़ेंगे तो यह बन सकते हैं। यह है एम ऑब्जेक्ट। सिम्पुल तौर तो एक का ही बनावेंगे। इसको मॉडल कहते हैं। तुम समझते हो बाप आया है श्री नारायण की कथा सुना नर से नारायण बनाने। पहले तो जरूर प्रिंस बनेंगे। शास्त्रों में दिखाया है कृष्ण ने मक्खन खाया। भूखा था क्या?वास्तव में यह है विश्व की बादशाही का गोला। बाकी चंद्रमा आदि कैसे मुख में दिखावेंगे?बात यह है दो बिल्ले आपस में लड़े, बीच में जो सृष्टि का मालिक बना इनको मक्खन दिखा दिया है। अब अपन से पूछो हम ऐसे बने हैं वा नहीं। यह पढ़ाई है राजाई पद के लिए। प्रजापाठशाला थोड़े ही कहेंगे। यह है ही नर से नारायण बनने की पाठशाला। गॉडली यूनिवर्सिटी। भगवान पढ़ाते हैं। यूनिवर्सिटी भी लिखने नहीं देते। बाबा ने कहा था लिखो ईश्वरीय विश्व विद्यालय। इनके नीचे लिखो गॉडली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी। बात तो एक ही है। तुमको कोई कह न सकेंगे। ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखना अला(अलाउ) करते हैं। बाकी यूनिवर्सिटी अक्षर लिखने न दिया। अजन लड़े नहीं हैं। बाबा कहते हैं ब्राइकेट में लिख दो ;परंतु यह लिखना भी भूल जाते हैं। फिर भी पत्थर बुद्धि मनुष्य कुछ समझते थोड़े ही हैं। तुम कितना भी किसको लिटरेचर आदि दो। समझ न सकेंगे। इसमें तो सम्मुख समझाना होता है। बेहद के बाप से यह बेहद का वर्सा मिलता है। जन्म–जन्मांतर तुम हद के वर्सा लेते आये हो। तुम इस बैज पर बहुत सर्विस कर सकते हो। भल कोई हंसी करे, कुछ भी करे , यह तो दो बाप के एक्युरेट बात है। अज्ञान काल में लौकिक बाप भी कहते हैं भगवान को याद करो। अब तो कहेंगे मैं हद का बाप हूं। बेहद का बाप एक ही शिवबाबा है। उनको याद करना है। उनसे बेहद का वर्सा लो। ऐसे बहुत अपने बच्चों को समझाते हैं। बच्चे बाप को समझाय ले आते हैं। स्त्री पति को लाती है। कहां2 फिर झगड़ा भी चलता है। अभी तुम जानते हो हम आत्माओं को बाप से वर्सा लेना है। तुम सब आत्माएं बच्चे हो। सब वर्से के हकदार हो। लौकिक सम्बंध में तो बच्ची जाये दूसरा घर बसाती है। उनको फिर कन्यादान कहा जाता है। दूसरे को देते हैं ना। अभी तो ऐसे कन्यादान भी न करना चाहिए। यही पाप तो करते आये हो। पाप चढ़ता है ना। सभी पापात्मा बन पड़े हैं। अब तो वह काम न करना है। यहां भी बच्ची को देना है। लेना है पर पवित्र रहते हैं। पाप होता नहीं। वह है शिवालय, यह है वैश्यालय। तुम स्वर्ग में तो जरूर जावेंगे। बाकी पुरुषार्थ का उंच पद पाना है। दिल से पूछना है हम फलानी मिसल सर्विस करते हैं। अच्छा, गुडमार्निंग।